द्वारा लखिति श्री मक्कि□ल सोना
शनविार, 17 मार्च 2007 20:57 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:32

वगित कुछ दशकों में स्□वास्□थ्□य संबंधी प्रयत्□नों में चार बातों पर अधकि बल दयि जाने के कारण भारत के स्□वास्□थ्□य परदिृश्□य में परविर्तन आया है□ ये हैं – वकिस कार्यों की जांच, स्□तनपान को प्रोत्□साहन, मौखकि पुनर्जलीकरण □वं टीकाकरण□ देश में शक्षिा के सुधरते स्□तर से जनस्□वास्□थ्□य में सुधार दखिाई पड़ रहा है□ उदाहरण के लगि□ केरल में साक्षरता वृ□द्धगि□ से वहां के जन-स्□वास्□थ्□य के स्□तर में भी वृद्धगि□ देखी गयी है□

सामाजकि मूल्□यों में परविर्तन/अथवा ह्रास –
आज अधकिांश परविारों का झुकाव भौतकि साधनों की ओर है□ टी.वी.; वीडयिो □वं म्□युज़ि□क ससि्□टम, क्□लबों □वं पार्टयिों के कारण बच्□चे उपेक्षति रह जाते है□ माता-पता उन पर ध्□यान नहीं देते□ आज परविारों में परस्□पर सम्□बंध □वं वार्तालाप का अभाव है□

मूल्□यों में ह्रास का दूसरा उदाहरण है सफलता को धन के उपार्जन के पैमाने में नापना□ दौलत पाने की अंधी दौड़ से परविार दुष्□प्रभावति हो रहे है□ इस प्रकार की पारवािरकि अव्□यवस्□था के कारण ये प्रभावति बच्□चे, स्□कूल में भी सबके साथ सामंजस्□य, नहीं बठिा पाते और न ही शक्षिा के प्रत उिनमें कोई रूच रिह जाती है□

सामाजकि मूल्□यों में तीसरा ह्रास है, लोगों का अकेला पड़ना□ आज हममें से बहुत कम लोग अपने पड़ोसयिों से सम्□बन्□ध रखते है□ बच्□चों को भी अपने पड़ोस में मत्रि नहीं मलिते□ इसीलगि□ वे फलि्□मी कलाकारों □वं खलिा□ड़□यों को अपना नायक या आदर्श मान बैठते है□

मौजूदा नैतकि संकट मूल्□य ह्रास का अभन्ि□न उदाहरण है□ शहरी क्षेत्रों के 40% वद्यिार्थी शराब के आदी है□ उनमें से 30% तो ड्रग □वं नशीली दवाओं के व्□यसनी पा□ ग□ है□

परविर्तनों के इस क्रम में पारवािरकि ढॉचे में परविर्तन उल्□लेखनीय है□ वगित 20 वर्षो से संयुक्□त परविार टूटे हैं और तलाकशुदा अथवा अलग-अलग रहकर बच्□चे पालने की प्रवृत्त बिढ़ी है□

बच्□चों के असुरक्षति समूह –
मूल्□यों में तेज़ी से हो रहे इस ह्रास अथवा परविर्तन के कारण बच्□चों के असुरक्षति समूह बढ़ रहे हैं और ये समूह प्राय□ सभी आयु वर्गो में वद्यिमान है□

स्□कूल जाने के पूर्व की अवस्□था के बच्□चे – दनिों दनि आसमान छूती मंहगाई के कारण पत□वं पत्□नी दोनों को नौकरी करने पर वविश होना पड़ता है□ इसका तत्□काल असर नवजात शशिुओं तथा छोटे बच्□चों पर पड़ता है□ यहां तक कि 6-12 सप्□ताह के बच्□चे भी दूसरों की देख-रेख में छोड़ दयि जाते है□ □क रसिर्च में नष्ि□कर्ष नकिला गया है कि सभी शशिुओं को माता के दीर्घ □वं स्□थायी साथ की आवश्□यकता होती है ताकि उनमें अपनापन □वं लगाव की भावना वकिसति हो सके□ ''मातृ शशिु-बन्□धु'' आरम्□भ होने के पूर्व ही मॉ के काम पर लौट जाने के कारण बच्□चों के अन्□दर

असुरक्षा की भावना पनपने लगती है□ वह सोचने लगता है कि मुझे कोई नहीं चाहता□ मेरी किसी को ज़रूरत ही नहीं है□ मेरी चनि्□ता कोई नहीं करता□ इससे स्□कूल जाने की पूर्वावस्□था □वं स्□कूल जाने योग्□य बच्□चों में ध्□यान-हीनता, व्□यवहार-वचिलन □वं मंद बुद्धि□ता जैसी समस्□या□ं उत्□पन्□न होती है□

लड़कियां (बालकि□ं) — आज भी लड़कियों की घोर उपेक्षा की जाती है□ उन्□हें हाशयिे पर रखा जाता है, दरकनिार किया जाता है□ यह प्रक्रयिा जन्□म के बहुत पहले से ही शुरू हो जाती है अर्थात् अल्□ट्रा साउण्□ड वधिि-द्वारा गर्भस्□थ भ्रूण के लड़का या लड़की होने का पता लगाकर लड़कियों के भ्रूण को गर्भपात द्वारा नष्□ट कर दयिा जाता है□ जन्□म लेने के बाद भी यह उपेक्षा जारी रहती है□ अधकिांश बालकि□ं कुपोषण की शकिार हो जाती हैं, क्□योंकि परविार के भोजन स्रोत में बालकि के हसि्□से से उन्□हें वंचति रखा जाना आज समाज की परम्□परा बन गयी है□ □क तो भोजन की कमी है ही, दूसरी ओर लड़कियों के साथ शारीरकि दुर्व्□यवहार भी किया जाता है□ केवल लड़की ही है जसिे जबरन घरेलू कार्य करना तथा मीलों दूर से पानी के भारी घड़े उठाने, पशुओं के लि□ चारा लाना □वं उनकी देखभाल इत्□यादि करना पड़ता है□

तरूण या किशोर — आज के तरूण या किशोर जड़ वहिीन □वं आदर्श भूमकिा वहिीन संस्□कृति में वकिसति हो रहे हैं□ माता-पिता सुदृढ़ नैतकि मूल्□यों के रखवाले नहीं रह ग□ हैं□ बच्□चे माता-पिता में दोगलापन देखते हैं, अत□ उनका सम्□मान नहीं करते□ सही मार्गदर्शन करने वाले तत्□वों के अभाव में आज तरूण ऐसी जीवन-शैली अपना बैठे हैं, जो उन्□हें वनिाश □वं पतन के गर्त में ढकेल देगी□

ज़रूरतमंद बच्□चे/ अभावग्रस्□त बच्□चे — इनमें शामलि हैं, गली-कूचों में भटकने वाले बच्□चे, बाल-श्रमकि, स्□कूल-त्□यागे हु□ बच्□चे, आदवािसी बच्□चे □वं गरीबी के शकिार बच्□चे, परन्□तु इन सबसे कहीं अधकि असुरक्षति हैं वशिेष ज़रूरत मंद बच्□चे, अर्थात् मानसकि अथवा शारीरकि वकिलांग बच्□चे□ हम □क ऐसे युग को ला रहे हैं जहां बचावकारी उपायों के कारण बच्□चों की रुग्□णावस्□था में कमी आ□गी, इसके बावजूद भी करोड़ों बच्□चे वभिनि्□न नर्बिलताओं के शकिार होंगे□

मसीही दृष्टकिोण — पौलुस 1कुरनि्थियों 1:27 में लखिता है, ''परमेश्□वर ने संसार के मूर्खों को चुन लयिा है कि ज्ञानवानों को लज्जति करे, और नर्बिलों को चुन लयिा है कि बलवानों को लज्जति करे''□ यहां पर ऐसे बच्□चे हैं जो हमें अत्□यन्□त मूर्ख, भंगुर □वं नर्बिल जान पड़ते हैं□ शरीर में टूटे हुय, देखने-सुनने अथवा बोलने में असमर्थ□ कनि्□तु इन समस्□त अक्षमताओं के बावजूद भी वे अपने में उल्□लेखनीय योग्□यता□ं रखते हैं□ ऐसे बच्□चों के माता-पिताओं का कहना है कि उनके बच्□चों की किसी वशिेष आवश्□यकता के फलस्□वरूप ही उन्□हें परमेश्□वर की उत्□तमता की अनुभूति हुई□ उनके बच्□चों की समस्□याओं के कारण वे न□ व्□यक्ति बन सके और उनके पारवािरकि जीवन को नया आयाम मलिा□ ये बच्□चे उन्□हें वशिेष ज़रूरतों की याद तो दलिाते ही हैं साथ ही साथ उनसे सामंजस्□य स्□थापति करने की अनुभूति पैदा करते हैं□ यह संदेश केवल वशिेष ज़रूरतमंद बच्□चों के द्वारा ही सम्□प्रेषति हो सकता है□

रूपान्□तरण इस रूपान्□तरण के तत्□व क्□या हैं? प्रथम — स्□वास्□थ्□य की देखभाल से सम्□पूर्ण स्□वस्□थता की ओर रूपान्□तरण□ सम्□पूर्ण स्□वस्□थता के अन्□तर्नहिति है, व्□यक्ति का आंतरकि आयाम□ आंतरकिता व्□यक्तति्□व की ओर इंगति करती है□ यह उस व्□यक्ति की ओर संकेत करती है जो अपने अन्□दर □वं बाहर से वास्□तवकिता के सम्□पर्क में है□ यीशु ने कहा ''मैं आया हूं कि तुम्□हें जीवन मलिे और बहुतायत से मलिे''□

यह वही बहुतायत है जसिका प्रतनिधित्ि□व सम्□पूर्ण स्□वस्□थता करती है□

द्वारा लखिति श्री मकि□ल सोना
शनविार, 17 मार्च 2007 20:57 - अंतमि अद्यतन गुरुवार, 20 मार्च 2008 18:32

द्वतिीय — वकिासशीलता से आकार पाने की ओर रूपान्□तरण□

आकार ग्रहण करने में नहिति है, प्रत्□येक बच्□चे में परखने □वं चुनने की योग्□यता का वकिास□ यह जानना कि इस बच्□चे में क्□या-क्□या योग्□यता□ं छुपी हुई हैं □वं उनमें उन सारी बातों को डालना अथवा नविश करना, जो उन्□हें आगे चलकर सार्थक जीवन व्□यतीत करने में सहायक सद्धि हो सकें□ यह अवधारणा भजन संहति 139 में पायी जाने वाली परमेश्□वर द्वारा नर्धिारति बच्□चे की नयिति को स्□पष्□ट करती है□ ऐसा करने के लि□ हमें अपने बच्□चों के साथ समय व्□यतीत कर उनके वरदानों, उनकी योग्□यताओं, वचिार प्रक्रयिाओं, स्□वप्□नों □वं आकांक्षाओं का पता लगाना होगा□

तृतीय — मूल्□यों पर आधारति व्□यवस्□था से आत्मकिता की ओर रूपान्□तरण□

मूल्□यों पर आधारति व्□यवस्□था मानवीय व्□यवस्□था का नमूना प्रदर्शति करती है□ नैतकिता □क बहु प्रचलति आम शब्□द है□ वभिन्□न संस्□कृतयिों □वं दशाओं में नैतकिता के वभिन्□न अर्थ होते हैं□ अत□ नैतकिता पर बहस करना व्□यर्थ है□ हमें उसकी अपेक्षा व्□यक्तगित आत्मकिता की ओर बढ़ना होगा□

व्□यक्तगित आत्मकिता परमेश्□वर के व्□यक्तगित ज्ञान से नर्मिति होती है□ मसीही होने के नाते यह यीशु के साथ गहरे आत्□मीय सम्□बंधों के फलस्□वरूप उभरती है□ यह यीशु के प्रतविय्□यक्ति के अभी न बंटने और टूटने वाले समर्पण □वं भक्ति को प्रतबिम्बिति करती है□

व्□यक्तगित आत्मकिता शष्ि□यता में पनपती है□ यद हिमें अपने बच्□चों में व्□यक्तगित आत्मकिता को उनकी जीवनचर्या बनाना है तो उन्□हें शष्ि□य के रूप में नर्मिति करना होगा□ मसीह में वशि्□वास करना मात्र पर्याप्□त नहीं है, हमें उन्□हें मसीह की सच्□ची शष्ि□यता □वं परपिक्□वता में प्रगत करते हु□ देखने की आवश्□यकता है□

अगामी कदम
वे जो बाल-वकिास के कार्यो में संलग्□न हैं, उन्□हें अपने कार्य में व्□यस्□त होने से बढ़कर कार्य में लीन होना है□ कार्य आत्□म-त्□याग की मांग करता है□ इससे कार्य वशिष्□ट हो जाता है, अनुपम हो जाता है□ क्□या हमारी जीवन शैली इसलि□ बदल गयी है क्□योंक हिम बच्□चों के साथ कार्य करते हैं? क्□या हम अधकि वनिम्र बन ग□ हैं? यद हिम आत्□म-त्□यागी बनने में इच्□छुक नहीं हु□ हैं तो हमारे भले कार्य परमेश्□वर के सम्□मुख मैले चीथड़े के समान होंगे□ यद हिम यीशु की सेवा के तरीके पर वशि्□वास करते हैं तो केवल □क ही मार्ग है ''परमेश्□वर बढ़े और मैं घटूं'' यही वह सद्गुण है, जसिसे हमारी सेवाओं को चलाना है□ यही वह सद्गुण है जो हमें बच्□चों की पर□वरशि करने □वं बाल-वकिास कार्यक्रमों को संवर्धति करने हेतु प्रोत्□साहति करता है□

संकलति — □म.पी. सोना